संपादकीय जागरण

सोमवार, 15 जनवरी, 2018 : माघ कृष्ण 14 वि. 2074

सेवा उपासना की सबसे सार्थक पद्धति है

# रावत की सही सलाह

**सेना प्रमुख** जनरल बिपिन रावत का यह कथन उल्लेखनीय है कि सीमा पार आतंकवाद को रोकने के लिए पाकिस्तान पर और अधिक दबाव बनाने की गुंजाइश है। यह गुंजाइश इस बात से भी नजर आती है कि भारत की तमाम कूटनीतिक आक्रामकता के बावजूद पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। सबसे चिंताजनक यह है कि वह जम्मू-कश्मीर से लगती सीमा पर ऐसी गतिविधियों में लिप्त है जो भारत को नुकसान पहुंचाने और सुरक्षा मोर्चे पर उसकी कमजोरी को उजागर करने वाली हैं। यह ठीक है कि भारत सरकार की ओर से लगातार यह कहा जा रहा है कि सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया जा रहा है, लेकिन इसकी अनदेखी भी नहीं की जा सकती कि सीमा पर और सीमा के अंदर पाकिस्तान पोषित आतंकी अपनी गतिविधियां जारी रखने में सक्षम हैं। यह भी एक तथ्य है कि आतंकवादी पाकिस्तानी सेना के सहयोग-समर्थन से सीमा पर तैनात जवानों को निशाना बनाने और घुसपैठ करने में भी सक्षम हैं। सीमा पर सैन्य चौकसी बढ़ाने के बावजूद पाकिस्तानी सेना जिस तरह आए दिन संघर्ष विराम का उल्लंघन करती रहती है उससे यही पता चलता है कि अभी उसे जरूरी सबक सिखाया जाना शेष है। ध्यान रहे कि संघर्ष विराम की इन घटनाओं में सेना और सुरक्षा बलों के साथ सीमावर्ती इलाके में रह रहे लोगों को भी क्षति उठानी पड़ रही है।

भारत सरकार को इस नतीजे पर पहुंचने में और देर नहीं करनी चाहिए कि संघर्ष विराम पूरी तरह निरर्थक हो चुका है। इसका प्रमाण इससे मिलता है कि पिछले वर्ष पाकिस्तानी सेना की ओर से करीब आठ सौ बार संघर्ष विराम का उल्लंघन किया गया है। समस्या केवल यह नहीं है कि पाकिस्तान नियंत्रण रेखा अथवा सीमा रेखा को अशांत-अस्थिर बनाए हुए है, बल्कि यह भी है कि वह कश्मीर घाटी के आतंकवाद एवं अलगाववाद समर्थकों को पहले की ही तरह उकसाने में लगा हुआ है। इसके भी प्रमाण आ चुके हैं कि वह इन तत्वों को चोरी-छिपे आर्थिक मदद भी दे रहा है। जब तक पाकिस्तान कश्मीर घाटी में हस्तक्षेप करने में समर्थ है तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि वह दबाव में आ गया है। भारत को इससे बहुत अधिक उत्साहित नहीं होना चाहिए कि अमेरिकी प्रशासन ने पाकिस्तान के प्रति अपने तेवर तीखे कर लिए हैं, क्योंकि इन तीखे तेवरों के बावजूद ऐसे संकेत नहीं मिल रहे हैं कि अमेरिका पाकिस्तान पर इसके लिए भी कोई ठोस दबाव बना रहा है कि वह लश्कर और जैश सरीखे आतंकी संगठनों पर लगाम लगाए। ये दोनों आतंकी संगठन पाकिस्तान में पहले की ही तरह संरक्षित तो हैं ही, वे अपने आतंकियों की कश्मीर में घुसपैठ भी कराते रहते हैं। यह स्पष्ट नहीं कि थल सेनाध्यक्ष पाकिस्तान पर किस तरह का दबाव और बढ़ाने की गुंजाइश देख रहे हैं, लेकिन इतना तो है ही कि भारत ने अभी तमाम विकल्पों का इस्तेमाल नहीं किया है। बात चाहे सिंधु जल समझौते पर पुनर्विचार की हो अथवा पाकिस्तान को दिए गए सर्वाधिक तरजीही राष्ट्र के दर्जे की-मौजूदा हालात में इसका कोई औचित्य नहीं कि भारत पाकिस्तान पर दबाव बनाने में कहीं कोई कोर-कसर उठा रखे।

# सुगम होती व्यवस्था

**प्रदेश में** ड्राइविंग लाइसेंस हासिल करने की कवायद अब थोड़ी सुगम होने जा रही है। नई व्यवस्था के तहत जिलों के आरटीओ दफ्तरों में सिमुलेटर लगाये जायेंगे। बाइक और कार के लाइसेंस के लिए आवेदन करने वालों को अब इन्हीं सिमुलेटर पर बैठकर अपनी ड्राइविंग का कौशल दिखाना होगा। इसी आधार पर मार्किंग होगी और पास होने वालों को लाइसेंस जारी कर दिया जायेगा।

दरअसल, विदेश में सिमुलेटर पर टेस्ट देने का चलन लंबे समय से चल रहा है। अन्य देशों से कदमताल करने के लिए सूबे की सरकार ने सिमुलेटर से टेस्ट की व्यवस्था लागू करने का निर्णय किया। इस व्यवस्था के पूरी तरह लागू होने पर ड्राइविंग टेस्ट के लिए अब मौके पर अपनी कार और मोटरसाइकिल ले जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ड्राइविंग टेस्ट की इंडोर व्यवस्था के तहत सभी संभागीय कार्यालयों में वीडियो गेम जैसी मशीन पर बैठकर वाहन चालक टेस्ट देगा। इन सिमुलेटर के लिए डस्ट फ्री चैंबर बनाये जायेंगे, जो पूरी तरह वातानुकूलित होंगे। टेस्ट देने वाला जैसे ही इस मशीन पर बैठेगा उसके सामने लगी स्क्रीन ऑन हो जाएगी। वीडियो गेम की तरह उसे एक सड़क दिखाई पड़ेगी। टेस्ट देने वाले को उसी मशीन पर बैठकर आभासी रूप से दोपहिया या चौपहिया वाहन दौड़ाना होगा। यातायात संकेतकों पर ड्राइविंग का कौशल परखा जाएगा। गलतियां मशीन में दर्ज होती जाएंगी। हर गलती पर नंबर कटेंगे। टेस्ट पांच से आठ मिनट का होगा। गाड़ी चलाने का यही 'अनुशासनिक आभास' ड्राइविंग टेस्ट में फेल या पास का आधार बनेगा। इस व्यवस्था से जहां लोगों का समय बचेगा वहीं परिवहन विभाग पर अंगुली उठाने का अवसर भी शून्य हो जाएगा।

**इस व्यवस्था से जहां लोगों का समय बचेगा वहीं परिवहन विभाग पर अंगुली उठाने का अवसर भी शून्य हो जाएगा**

## कह के रहेंगे

माधव जोशी

## जागरण जनमत

कल का परिणाम

**सुप्रीम कोर्ट में जजों के मतभेद सार्वजनिक होने से क्या न्यायपालिका की साख प्रभावित होगी?**

**आज का सवाल**

क्या कप्तान कोहली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टेस्ट में भुवनेश्वर कुमार को न खिलाकर सही किया है?

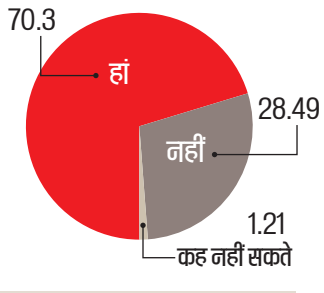


अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
**Y** -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम एसएमएस से प्राप्त नतीजों के साथ जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

# भारत की आत्मा में समाई संस्कृत

हृदयनारायण दीक्षित

**भारत के प्रतीक चिन्ह में तीन शेरों व चक्र के नीचे 'सत्यमेव जयते' छपा है। यह भी संस्कृत में है। तमाम संस्थानों में संस्कृत की महत्ता के ऐसे और भी उदाहरण हैं**

अस्तित्व अनंत और असीम। हम मनुष्य इसी की अविभाज्य इकाई हैं। अस्तित्व की प्रतिकूलता विषाद है और अनुकूलता प्रसाद। इकाई और अनंत की प्रीति में आनंद है। अनंत से इकाई का संवाद ही प्रार्थना है। अस्तित्व वैयक्तिक भगवान या ईश्वर नहीं है। वह प्रत्यक्ष है और जो प्रत्यक्ष है वह अंधविश्वास नहीं होता। भारत की सर्वोच्च न्यायपीठ ने केंद्रीय विद्यालयों में प्रतिदिन होने वाली प्रार्थना पर रोक लगाने संबंधी एक याचिका विचारार्थ स्वीकार की है। कोर्ट ने सरकार को पक्ष रखने के लिए चार हफ्ते का समय देकर पूछा है कि केंद्रीय विद्यालयों में प्रार्थना क्यों होनी चाहिए? याचिका के अनुसार संस्कृत और हिंदी प्रार्थना से छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में बाधा आ रही है। ईश्वर और हिंदू धार्मिक आस्था की प्रार्थना सेक्युलर राज्य द्वारा प्रायोजित किए जाने को प्रश्नवाचक बनाया गया है। मुकदमे को विचारार्थ स्वीकार करना न्यायालय का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन सुप्रीम कोर्ट परिसर में ही प्रधान न्यायाधीश के कक्ष के पास संस्कृत में ही 'यतो धर्मस्य धर्मस्ततो जयः' ध्येय वाक्य लिखा हुआ है। महाभारत से उद्धृत इस वाक्य का अर्थ सुस्पष्ट है कि 'जहां धर्म है, वहीं विजय है।' कोर्ट ने धर्म संबंधी याचिका पर नोटिस जारी करते समय संभवतः अपने ही इस निष्कर्ष सूत्र पर ध्यान नहीं दिया। संस्कृति निरपेक्ष नहीं होती। प्रत्येक संस्कृति का अपना दर्शन होता है। हरेक संस्कृति की एक सभ्यता होती है। सभ्यता को समाज की देह कहा जाता है और संस्कृति को सभ्यता का प्राण। सभ्यता और संस्कृति से मिलकर एक जीवनशैली का विकास होता है। भारत में इसी जीवनशैली का नाम धर्म है। भारतीय उपमहाद्वीप में धर्म का जन्म किसी देवदूत की घोषणा से नहीं हुआ। दुनिया के अन्य देशों में मत मजहब या पंथ की घोषणाएं हुईं। ईश्वर भी घोषणा का भाग था। भारत में इसके उलट पहले तर्क प्रतितर्क आधारित दर्शन का विकास हुआ। यहां अतिरिक्त जिज्ञासा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के बाद धर्म का विकास हुआ। इसलिए यहां के धर्म परायण लोग अंधविश्वासी या बिलीवर नहीं खोजी हैं। धर्म यहां शोध और बोध का तत्व रहा है। लोकसभा मंडप में अध्यक्ष के आसन के पीछे 'धर्म चक्र प्रवर्तनाय' लिखा हुआ है। क्या इस सुंदर वाक्य का कोई धर्मविहीन दूसरा विकल्प हो सकता है?

संसद भवन ऐसे सूक्तों से समृद्ध है। संसद के केंद्रीय कक्ष के द्वार संख्या एक की ओर बढ़ते हुए पंचतंत्र (5.38) का सूक्त अंकित है, 'अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम/ उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम-यह मेरा है, यह पराया सोचने वाले संकीर्ण बुद्धि के हैं, उदारमना के लिए यह पूरी पृथ्वी एक परिवार है।' यह संस्कृत में है। फिर लिफ्ट संख्या एक के पास सभा की संरचना के बारे में स्वर्ण जैसे चमकते अक्षरों में महाभारत का ही सुंदर वाक्य हैं 'न सा सभा यत्र न संति वृद्धा/ वृद्धा न ते यो न वदंति धर्मम्। धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति- वह सभा सभा नहीं जहां वृद्ध न हों। वे वृद्ध वृद्ध नहीं हैं जो धर्मनिष्ठ न हों। वह धर्म धर्म नहीं जो सत्य नहीं है।' ऐसे ही अनेक सूक्त आज भी प्रेरक हैं। क्या इन्हें सिर्फ इसलिए हटाया जा सकता है कि वे संस्कृत में हैं? या हिंदू उन्हें आदर देते हैं। मूलभूत प्रश्न है कि क्या सर्वोच्च न्यायपीठ और सर्वोच्च विधायी संस्था संसद भवन के अंतरंग से संस्कृत और प्राचीन संस्कृति की सतत् प्रवाही धारा को सेक्युलरी रंग रोगन से खारिज किया जा सकता है? आखिर प्राचीन भारतीय परंपरा से ऐसी शत्रुता के मूल कारण क्या हैं? क्या सेक्युलर पंथ के पास ऐसे ही मार्गदर्शी शाश्वत सूक्त हैं? उनकी प्रेरणा के सूत्र हैं क्या?

संविधान भारत का राजधर्म है। संविधान सभा भारतीय जनगणमन से सुपरिचित थी। संविधान की हस्तलिखित प्रति में भारतीय संस्कृतिमूलक 23 चित्र उकेरे गए थे। मुखपृष्ठ पर श्रीराम और श्रीकृष्ण। भाग एक में सिंधु सभ्यता की मोहरों के चित्र और भाग दो में वैदिककालीन गुरुकुल आश्रमों की स्मृति। मौलिक अधिकार वाले अंश में श्रीराम की लंका विजय, नीति निदेशक वाले अंश में श्रीकृष्ण और अर्जुन के गीता संवाद की झांकी। फिर बुद्ध और महावीर और फिर सम्राट अशोक। फिर गुप्तकाल, विक्रमादित्य, नालंदा विश्वविद्यालय, ओडिशा का स्थापत्य, भाग 12 में नटराज, 13 में गंगावतरण 14 में मुगल स्थापत्य, 15 में शिवाजी और गुरु गोविंद सिंह, 16 में महारानी लक्ष्मीबाई, 17 व 18 में गांधीजी की दांडी यात्रा व नोआखाली शांति मार्च फिर नेताजी सुभाषचंद्र बोस और अंत में हिंद महासागर। संविधान पारण के बाद अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने कहा, 'अब सदस्यों को संविधान की प्रतियों पर हस्ताक्षर करने हैं। हस्तलिखित अंग्रेजी की प्रति में कलाकारों ने चित्र बनाए हैं।' क्या श्रीराम और श्रीकृष्ण को इस चित्रांकन में सम्मिलित करना सेक्युलर विरोधी है? गुरु गोविंद सिंह या शिवाजी के बारे में कथित सेक्युलर मित्रों की राय क्या है? क्या उनके पास भारत के लिए कोई मार्गदर्शी सूक्त हैं?

अवधेश राजपूत

भारतीय राष्ट्र राज्य के प्रतीक चिन्ह में तीन शेरों व चक्र के नीचे 'सत्यमेव जयते' छपा रहता है। यह भी संस्कृत में है। यह उत्तर वैदिक कालीन मुण्डकोपनिषद् में आया है 'सत्यमेव जयते नानृतं-सत्य की विजय होती है, झूठ की नहीं।' संस्कृत और वैदिक धर्म का सूत्र होने के कारण याचिकाकर्ता की राय इसके भी विरोध में होगी। सेक्युलर राज्य द्वारा वैदिक मंत्रों को प्रतीक चिन्ह का भाग बनाना उन्हें कैसे मंजूर होगा? दोनों हाथों से दीपक की लौ को बुझने से रोकने के प्रयास वाला भारतीय जीवन बीमा निगम का प्रतीक चिन्ह ध्यान देने योग्य है। इसके ठीक नीचे गीता से श्रीकृष्ण का 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' आश्वासन भी संस्कृत में छपता है। इसका क्या करेंगे? संस्कृत और संस्कृति को भारतीय लोकजीवन से हटाने का काम असंभव है। उपनिषदों में प्रार्थना है- तमसो मा ज्योतिर्गमय- हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। किससे प्रार्थना है? ऋषि ने सूत्र में यह बात नहीं कही। यहां ईश्वर या भगवान नहीं है। ऋषि निश्छल प्रकाश अभीप्सु है। ऋग्वेद, अथर्ववेद में 'जीवेम शरदः शतं'-100 शरद जीवन की अभिलाषा है। यहां भी कोई याचना नहीं। प्रार्थना में अभिलाषा का प्रगाढ़ होना पर्याप्त है।

प्रार्थना सक्रियता लाती है। प्रार्थना में संकल्प भाव होता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक भी इच्छा को प्रेरक मानते हैं। मनुष्य पूरे मन से जैसा सोचता है, उसकी शक्तियां उसी प्राप्ति में जुट जाती हैं। यजुर्वेद के एक सुंदर मंत्र में मनः शक्ति को समृद्ध बनाने की प्रार्थना है 'जो मेरा मन यहां, वहां, वन पर्वत या दूरस्थ क्षेत्रों की ओर भागा करता है, वह हमारा मन कल्याणकारी संकल्प से भर जाए।' यहां मनः शक्ति के संवर्धन की अभिलाषा है। वैज्ञानिक आज यह बात मान रहे हैं। मुण्डकोपनिषद् के अनुसार हम जो कुछ चाहते हैं, हमें वही सब मिलता है।' मनोविज्ञान की यह अनुभूति हिंदू संस्कृति का ही आख्यान है। संस्कृत साहित्य में जबर्दस्त इहलोकवाद है। हिंदू संस्कृति की अभिव्यक्ति भी इसी भाषा में हुई है। ऋग्वेद में 'नमस्कार' को देवता बताकर नमस्कार किया गया है। क्या सेक्युलर मित्र बच्चों को नमस्कार से भी रोकने के इच्छुक हैं। ऐसे मित्रों को दूर से ही नमस्कार है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

# गांवों की ओर देखने का वक्त

मार्कण्डेय राय

**देश में शहरों के सतत विकास के लिए हमें ग्रामीण क्षेत्र के समुचित विकास की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए**

विश्व स्तर पर ग्रामीण इलाकों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अधिक लोग रहते हैं। 2007 में पहली बार इतिहास में वैश्विक शहरी आबादी वैश्विक ग्रामीण जनसंख्या से अधिक हुई और दुनिया की जनसंख्या इसके बाद मुख्य रूप से शहरी बनी हुई है। 21वीं शताब्दी के शहरी इलाकों का प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण विकास चुनौतियों में से एक बन गया है। निरंतर शहरों के निर्माण में हमारी सफलता या विफलता 2015 के बाद के संयुक्त राष्ट्र विकास एजेंडे की सफलता में एक प्रमुख कारक होगी।

इस शताब्दी में चार मेगा ट्रेंड उभरे हैं, शहरीकरण उनमें से एक है। आज विश्व की 54 प्रतिशत जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में रहती है जो 2050 तक बढ़कर 66 प्रतिशत हो जाने की संभावना है। हालांकि 2030 तक इसके 60 प्रतिशत तक पहुंचने की उम्मीद है। दूसरे शब्दों में कहें तो 2050 तक शहरी क्षेत्रों में रहने के लिए अतिरिक्त 2.5 अरब लोगों की भविष्यवाणी की गई है। शीर्ष 600 शहरी केंद्रों की वैश्विक जीडीपी में लगभग 60 प्रतिशत हिस्सेदारी है। करीब एक अरब लोग मलिन बस्तियों में रहते हैं जो कि हमारी वैश्विक आबादी का 14 प्रतिशत है। साल 2018 निरंतर विकास 'लक्ष्य 11' का वर्ष है! लक्ष्य 11 'शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और टिकाऊ' बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। वहीं संयुक्त राष्ट्र की नई शहरी कार्यसूची हमारे शहरों की योजना, निर्माण, प्रबंधन और शासन के तरीके को और बेहतर बनाने के लिए एक कार्यान्वयन ढांचा है।

वर्तमान में दुनिया में सबसे अधिक शहरी क्षेत्र उत्तरी अमेरिका में है, जहां जनसंख्या का 82 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में रहता है। इसके बाद लैटिन अमेरिका और यूरोप का स्थान आता है जहां क्रमशः 80 प्रतिशत और 73 प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है। अफ्रीकी आबादी का कम से कम 40 प्रतिशत हिस्सा और एशिया में 48 प्रतिशत लोग शहरी इलाकों में रहते हैं जो 2050 में बढ़कर क्रमशः 56 और 64 प्रतिशत रहने का अनुमान है। माना जा रहा है कि भारत में ही 2050 तक 50 प्रतिशत जनसंख्या शहरी हो जाएगी। अभी दिल्ली सहित देश के सात शहरों की जनसंख्या 50 लाख से अधिक है। दिल्ली वर्तमान में दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। 2030 तक इसकी आबादी 3.6 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। 3.8 करोड़ की आबादी के साथ टोक्यो दुनिया का सबसे बड़ा शहर है। 2030 तक इसकी आबादी 3.7 करोड़ के साथ शीर्ष पर रहेगी। वहीं शांघाई की जनसंख्या 2.3 करोड़, मैक्सिको सिटी, मुंबई तथा साओ पाओलो की आबादी 2.1 करोड़ और ओसाका की जनसंख्या 2 करोड़ हो जाएगी। हमारे भारत में ही अभी 465 से अधिक शहर एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले हैं। लगभग 165 शहरों में 3 लाख से अधिक आबादी है, जिसमें से 53 शहर 10 लाख से अधिक आबादी वाले हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु ने विश्व के 30 बड़े महानगरों में अपना स्थान बना भी लिया है।

बहरहाल इस शहरी विकास के लाभ सभी में समान रूप से और स्थाई रूप से साझा किए जा सकें, इसके लिए सरकारों को नीतियां बनानी और लागू करनी होंगी। देखा जाए तो शहरी विकास के संबंध में वर्तमान और भविष्य की जरूरतों का आकलन करना बहुत ही जरूरी होता है। सशक्त शहरी विकास निरंतर विकास लक्ष्यों की उपलब्धि में और तेजी ही लाएगा। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र आवास संयुक्त राष्ट्र संघ की एक इकाई है जो स्थाई शहरीकरण और मानव बस्तियों पर केंद्रित है। अभी संयुक्त राष्ट्र आवास 60 से अधिक देशों में काम कर रहा है ताकि रचनात्मक शहरी नियोजन को वित्त और कानून के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सके। संयुक्त राष्ट्र आवास नई शहरी कार्यसूची और लक्ष्य 11 को लागू करने के लिए नेतृत्व और मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसी कड़ी में 25 जून, 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने '100 स्मार्ट सिटीज मिशन' की शुरुआत की थी। देश के 100 स्मार्ट शहरों के विकास और 500 अन्य शहरों के पुनरुत्थान के लिए 98,000 करोड़ रुपये को मंजूरी दी गई है। इसमें 48,000 करोड़ रुपये स्मार्ट सिटीज मिशन तथा कायाकल्प और 50,000 करोड़ रुपये का प्रावधान अमरुत योजना के तहत शहरी परिवर्तन के लिए किया गया है।

दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र वर्तमान और नई पीढ़ी के रहने के लिए उपयुक्त नहीं है। अभी दिल्ली में हवा की गुणवत्ता बहुत खराब है। नए साल की शुरुआत से ही पीएम 2.5 खतरे की सीमा के ऊपर है। आज भी पीएम 2.5 का स्तर करीब 400 के आसपास बना हुआ है, जो जनजीवन को अस्त-व्यस्त किए हुए है। डॉक्टरों और विशेषज्ञों ने सुबह में चलने और व्यायाम बंद करने की सलाह दी है। ऐसी स्थिति में भारत में शहरों के सतत विकास के लिए हमें ग्रामीण क्षेत्र के समुचित विकास की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए। 'पुरा' (प्रोवाइडिंग अर्बन एमेनेटिज टू रूरल एरिया) अर्थात ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं का प्रावधान के सिद्धांत का कार्यान्वयन करना बहुत जरूरी है जो हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने दिया था।

'पुरा' का उद्देश्य ग्राम पंचायतों और निजी क्षेत्र की भागीदारी से शहरी सुविधाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यान्वित करना है। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में विकास योजनाओं को पूरा करने के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों ही क्षेत्र के लोगों के अनुभव और विशेषज्ञता का लाभ लेने की बात कही गई है। इसके लिए फंडिंग की व्यवस्था केंद्रीय योजनाओं से की जा सकती है। इसके अलावा 'पुरा' का प्रस्ताव है कि शहरों के बाहर आर्थिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीण केंद्रों में शहरी बुनियादी सुविधाएं और सेवाएं प्रदान की जाएंगी। व्यावसायिक और तकनीकी संगठनों की स्थापना की जाएगी ताकि सड़कों और इलेक्ट्रॉनिक संचार के जरिये भौतिक कनेक्टिविटी और ज्ञान कनेक्टिविटी साकार हो सके और फिर आर्थिक कनेक्टिविटी का लक्ष्य हासिल किया जा सके। साल 2004 के बाद से ही भारत सरकार कई राज्यों में पायलट 'पुरा' कार्यक्रम चला रही है। इस दौरान सामने आई खामियों को दूर कर इसे राष्ट्रीय स्तर लागू करने का अब समय आ गया है। दरअसल सामाजिक समावेश कार्यक्रम का उद्देश्य देश के ग्रामीण इलाकों में पीने के पानी, सड़क, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और दूरसंचार सेवाओं जैसी सुविधाएं प्रदान करना है। इसमें कोई दो राय नहीं कि जब ये उद्देश्य पूरे हो जाएंगे तभी देश के सभी गांव सही मायने में विकास प्रक्रिया का हिस्सा बन पाएंगे।

(लेखक संयुक्त राष्ट्र आवास के वरिष्ठ सलाहकार एवं ग्लोबल पीस एंड डेवलपमेंट सर्विस एलायंस के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

## ऊर्जा

### बुद्धि

बुद्धि का विकास आवश्यक है। हम बुद्धि का विकास किस ओर करते हैं, यह बात विचारणीय है। बुद्धि का विकास हम दो दिशा में कर सकते हैं। प्रथम, हम बुद्धि को सही दिशा देकर उसे ज्ञान की उच्चतम अवस्था की उपलब्धि करा सकते हैं। कहने का आशय यह है कि हम बुद्धि को बाह्य जगत से मोड़कर अपने अंतर्मन की ओर अग्रसारित करा सकते हैं, जिससे वह अपनी आत्मा के आलोक को प्राप्त कर ले और यही मनुष्य जन्म प्राप्त करने का सच्चा व यथार्थ उद्देश्य है। देश में इसी दिशा की ओर सभी महापुरुष चले हैं। उनके द्वारा वह उन्नति प्राप्त की गई है। इस कारण उन्होंने समाज व संसार को सही रास्ता दिखलाया। बुद्धि भावना से जुड़कर आत्मिक उन्नति को प्राप्त कर पाती है। इसके विपरीत बुद्धि जब भावना का परित्याग करते हुए मात्र बुद्धिवादी बनकर आगे बढ़ती है, तब वह इंद्रियों के सुखों की पोषक होती है। वह इस ओर लग जाती है कि किस प्रकार से शरीर के सुख के लिए अधिक से अधिक योगदान किया जा सके। शरीर सुख ही मुख्य उद्देश्य रह जाता है। जैसा कि आजकल दृष्टिगोचर हो रहा है। आज समाज बिखर रहा है। क्यों? इसलिए कि लोग केवल बुद्धिवादी होकर रह गए हैं। भावना का परित्याग कर दिया गया है। बुद्धि की बाजीगरी चल रही है।

लोग कैसे-कैसे झूठ, फरेब, छल, कपट को ओढ़ते चले जा रहे हैं। बुद्धि से तमाम पैंतरे करते रहते हैं। हर तरफ बिखराव की स्थिति दिखाई पड़ती है। सब एक-दूसरे को दोष देते रहते हैं, मगर वे क्यों नहीं समझ पाते कि भाव का परित्याग कर केवल बुद्धिवादी बनकर वैतरणी नहीं पार की जा सकती। आज बुद्धि की समस्त चेष्टाएं संसार की ओर अग्रसर हो चुकी हैं। ठगी का बाजार गर्म है। वे इस बात को भूल गए हैं कि हम किस देश के रहने वाले हैं, जहां बुद्धि का विकास अपने चरमोत्कर्ष पर रहा है। बुद्धि को संसार में उतना ही प्रयुक्त किया जाता रहा है जिससे सही जीवनयापन हो सके, न कि अंधी सांसारिक सुखों की दौड़ में लहूलुहान हो जाए। अब पुनः बाहर की दौड़ पर लगाम लगाकर अपने यथार्थ सुख की प्राप्ति की ओर बुद्धि को ले जाना होगा। बुद्धि को रचनात्मक कार्यों की ओर लगाना होगा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन लोगों ने बुद्धि को ध्वंसात्मक कार्यों की और लगाया, वे अंततः पराजित ही हुए।

अशोक वाजपेयी

## पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

### न्यायपालिका की साख

सड़क पर सुप्रीम कोर्ट के मतभेद शीर्षक से लिखे अपने लेख में संजय गुप्त ने वाजिब सवाल उठाया है। चारों वरिष्ठ न्यायाधीशों ने 1999 में जजों के लिए बनाई गई न्यायिक आचार संहिता का उल्लंघन किया है। उन्हें तो मीडिया को साक्षात्कार तक देने की मनाही है। बिना मुख्य न्यायाधीश की अनुमति वे प्रेस से बात नहीं कर सकते। क्या कार्यपालिका का कोई उच्च अधिकारी जैसे कोई प्रमुख या मुख्य सचिव सीधे मीडिया के समक्ष अपनी शिकायतें प्रस्तुत कर सकता है? उसकी सेवा नियमावली में इसकी स्पष्ट मनाही है। और यदि वह अपने सेवा नियमों को तोड़ता है तो दंड का भागीदार बनता है। इसी प्रकार इन जजों ने आचार संहिता के रूप में प्रतिष्ठित अपने सेवा नियमों को तोड़ा है। केवल और केवल मुख्य न्यायाधीश को ही यह अधिकार है कि वे न्यायालय में लाए जा रहे मामलों को विभिन्न बेंचों को आवंटित करें। यह असंदिग्ध स्थिति है। किसी खास केस का आवंटन अपने लिए पाने का प्रयास अवैध-असंवैधानिक है तथा शक पैदा करता है। प्रेस कांफ्रेंस ने भारत की न्यायपालिका की साख को अपूरणीय क्षति पहुंचाई है।

अजय मित्तल, मेरठ

### आसियान देश

26 जनवरी इस बार खास नजर आ रही है। इसे भारत के रक्षा सहयोग और व्यापार की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण माना जा रहा है। जिस तरह से भारत ने आसियान के दस देशों के प्रमुखों को मुख्य अतिथि बनाया है वो अपने आप में अनूठी मिसाल पेश करता है। इसे चीन के पड़ोसियों के बीच अपनी गहरी पैठ बनाने के रूप में देखा जा रहा है। चीन के दबदबे से परेशान इनमें से कई देश खुलेआम भारत के साथ सैन्य एवं रणनीतिक रिश्ते मजबूत करने के लिए आतुर नजर आ रहे हैं। भारत को अपने रक्षा उपकरणों के लिए इन देशों के बीच एक बड़ा बाजार भी दिख रहा है। कुछ देशों ने भारत में विकसित हथियारों को खरीदने में रुचि भी दिखाई है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी ये देश भारत के लिए बेहद अहमियत रखते हैं।

ss6066356@gmail.com

### खरीदार कौन है?

देश की सबसे बड़ी अदालत के चार वरिष्ठ जजों ने मुख्य न्यायाधीश के कार्य प्रणाली पर सवाल उठाया है। इससे न्याय व्यवस्था पर संदेह उठना स्वाभाविक है। इसके साथ ही लोकतंत्र खतरे में है कहकर मामले को और भी गहरा कर दिया है। समझ में नहीं आता है कि लोकतंत्र के खतरे का दायरा कहां तक विस्तृत है। पत्रकारवार्ता में अपनी आत्मा बेच देने का भी जिक्र आया है, पर स्पष्ट नहीं है खरीदार कौन है? ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का निदान सरकार, नेता, न्यायविद् और प्रबुद्ध वर्ग मिलकर ढूंढे। ऐसी व्यवस्था दें कि जनता के मन में हमारी न्याय व्यवस्था के प्रति संदेह न रहे।

डीपी वर्मा, एडवोकेट, इंदिरापुरम

### गलत आपत्ति

14 जनवरी के अंक में संजय गुप्त का लेख, सड़क पर सुप्रीम कोर्ट के मतभेद, पढ़ा। सुप्रीम कोर्ट के चार वरिष्ठ जजों का यह कहना कि जूनियर जज की बेंच मामले को क्यों सुन रही है, इसका कोई तुक नहीं बनता। एक तरफ तो वे कह रहे हैं कि संविधान अनुसार सुप्रीम कोर्ट के सभी जज समान हैं। फिर उनकी यह आपत्ति गलत है। आखिर वो विशेष मामलों में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं। विद्रोही तेवर दिखाने के बाद एक जज का एक राजनैतिक दल केनेता से मिलना भी कहां तक जायज ठहराया जा सकता है।

सुमनवीर सिंह एडवोकेट, पलवल

### इसरो की कामयाबी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शुक्रवार को इतिहास रचते हुए अपना 100वां सैटेलाइट लांच कर दिया है। सैटेलाइट के प्रक्षेपण के लिए 28 घंटों की उल्टी गिनती गुरुवार से शुरू हो गई थी। पीएसएलवी श्रृंखला के इस सैटेलाइट का नाम कार्टोसेट-2 है। इस सैटेलाइन को 'आई इन द स्काइ' के नाम से भी जाना जा रहा है, क्योंकि ये अंतरिक्ष से तस्वीरें लेने के लिए ही बनाया गया है। खास बात यह है कि यह पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों पर पैनी नजर बनाए रखेगा। आज इसरो से अपने सेटेलाइट प्रक्षेपित करवाने के लिए अमेरिका समेत कई दूसरे देश लाइन में खड़े रहते हैं। इनकी बदौलत इसरो हर वर्ष करोड़ों रूपये कमाता है। भारतीय वैज्ञानिक संसाधनों के अभाव के बावजूद अपनी मेहनत की बदौलत दुनिया में परचम लहरा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने इसरो की नई कामयाबी पर वैज्ञानिकों को बधाई दी, इससे वैज्ञानिकों का मनोबल बढ़ेगा।

rohitjournalist68gmail.com

### डिजिटल बनें स्कूल

देश में डिजिटल इंडिया की मुहिम तेजी से चलाई जा रही है, लेकिन सरकारी और निजी शिक्षण संस्थाओं की सम्पूर्ण जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। हर सत्र में नर्सरी अथवा एलकेजी से सभी कक्षाओं की फ़ीस बढ़ोत्तरी, स्कूल ड्रेस, किताबे खरीदने के दबाव को लेकर अभिभावक परेशान नजर आते हैं। कई निजी स्कूलो में दाखिले के समय अनुभवी और प्रशिक्षित अध्यापक होते हैं, लेकिन बा